टप्पी, पक्षियों का पीछा क्यों नहीं करता?

लेखन व चित्र: **वाई. चारुशिन**

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

टप्पी को उसका नाम कैसे मिला?

जब टप्पी आश्चर्यचकित होता था और जब वो कुछ अजीब देखता था तो वो अपने होठों से एक अजीब टप-टप-टप ध्वनि निकालता था.

जब घास में हवा चलती थी, या कोई पक्षी उड़ता या तितली अपने पंख फड़फड़ाती, तो टप्पी अपनी आँखें खुली करके उसके पास जाता और कहता, "टुप-टुप-टुप, मैं तुम्हें पकड़ लूंगा!" मैं तुम पर झपटूंगा! मैं तुम्हारे साथ खेलूँगा!"

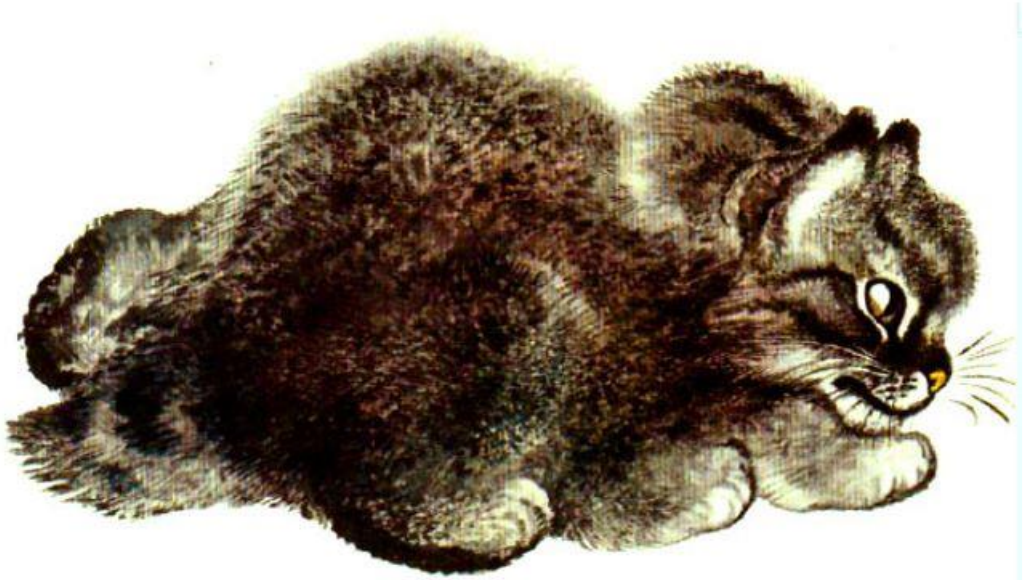

और इस तरह टप्पी को उसका नाम मिला.

एक बार टप्पी को एक हल्की सी सीटी सुनाई दी.

वहाँ आंवले की झाड़ियों में छोटे भूरे पक्षी तेजी से कीड़े-मकौड़ों का शिकार कर रहे थे.

टप्पी धीरे से सरककर वहां गया और छुप गया. उसने अपनी सांस रोक ली. उसने टुप-टुप-टुप भी नहीं कहा, क्योंकि उसे डर था कि वो पक्षियों को डरा देगा. अचानक, वो उन पर झपटा! उसने लगभग एक को पकड़ लिया. लेकिन वो ऐसा कर नहीं पाया.

टप्पी को अभी पक्षी पकड़ना नहीं आता था. वो केवल एक छोटा सा बिल्ली का बच्चा था.

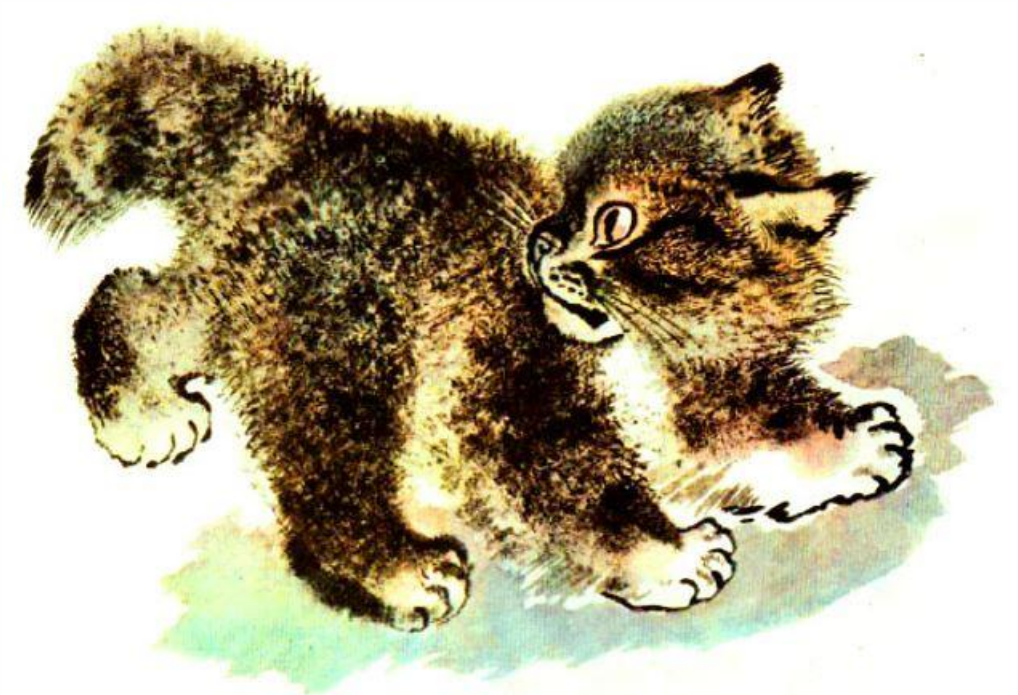

माँ बिल्ली को लगता था कि टप्पी अभी भी एक बच्चा था.

एक दिन टप्पी को मार पड़ी. उसकी माँ, नेट्टी ने उसकी खूब पिटाई की.

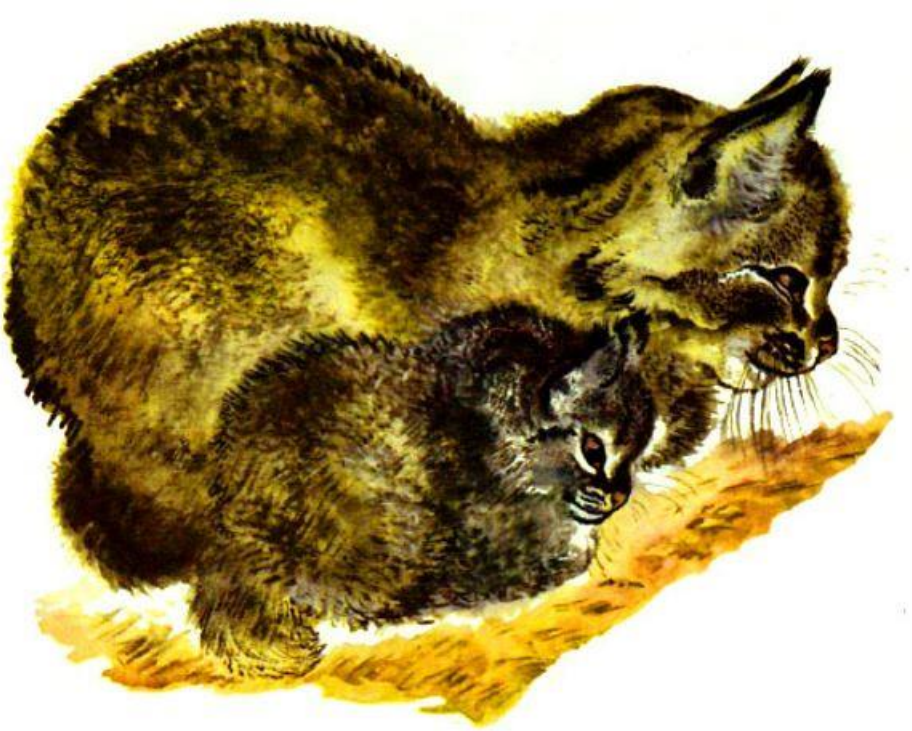

बिल्लियों के जब छोटे बच्चे होते हैं, तब वे हमेशा अपने बड़े बच्चों को भगा देती हैं. लेकिन नेट्टी बिल्ली के छोटे बच्चों को पहले ही दे दिया जा चुका था. अगले दिन नेट्टी मिमियाने लगी, घुरघुराने लगी और उसने टप्पी को बुलाया. टप्पी को अपनी पिटाई याद आई. इसलिए वो माँ के पास नहीं आया. वो दोबारा पिटना नहीं चाहता था.

नेटी ने कहा: "यहाँ आओ, मूर्ख."

टप्पी ने अपना मुंह चाटा. उसने तश्तरी से दूध पीना सीख लिया था, लेकिन उसे अपनी माँ का दूध ज्यादा स्वादिष्ट लगता था.

अंत में, वो माँ के पास पहुँचा. पर जल्द ही वो गहरी नींद में सो गया.

फिर अजीब चीजें होने लगीं.

आख़िरकार, टप्पी बड़ा हो रहा था. लेकिन नेटी को लगता था कि वो अभी भी एक छोटा बच्चा था. इसलिए उसने टप्पी को पलटा और वो उसे चाटने और साफ करने लगी.

टप्पी आश्चर्य से जाग उठा. कोई और उसे साफ करे वो उसे अब पसंद नहीं था. क्योंकि वो खुद अपने आपको साफ सकता था.

टप्पी भागना चाहता था, लेकिन नेटी ने गुर्राकर कहा: "अभी लेटे रहो, तुम अभी भी एक छोटे बच्चे हो, अगर तुम भागे तो फिर तुम खो जाओगे."

नेटी काफी देर तक घुरघुराती रही पर अंत में उसे नींद आ गई.

फिर टप्पी टोकरी से बाहर निकला और वो कुछ मौज-मस्ती करने के लिए निकला.

वो तितलियों को पकड़ने और गौरैयों पर झपटने जा रहा था.

जब नेटी उठी तो उसने देखा कि उसका प्यारा छोटा टप्पी गायब था. वो खो गया था!

नेटी बाहर आँगन में भागी और उसने टप्पी को बुलाया.

टप्पी वहाँ छत पर गौरैयों के पीछे भाग रहा था.

नेटी दौड़कर उसके पास गई.

"ध्यान रखो! नहीं तो तुम गिर जाओगे!" उसने चेतावनी दी.

लेकिन टप्पी ने एक भी नहीं सुनी. फिर नेटी ने टप्पी की गर्दन पकड़ी और वो उसे नीचे ले गई, जैसे कि वो एक छोटा बच्चा हो. टप्पी ने खूब लातें मारीं और चिल्लाया. क्योंकि वो छत पर खेलना चाहता था.

एक बार जब नेटी ने उसे टोकरी में वापस रखा तो उसने टप्पी को साफ किया और वो घुरघुराई. टप्पी यह समझ नहीं पा रहा था कि वो अब एक बिल्ली का बड़ा बच्चा था और उसे अब देखभाल करने वाली माँ की ज़रूरत नहीं थी.

एक दिन टप्पी ने एक गौरैया को एक शाखा पर बैठकर गाना गाते हुए देखा. "चीं-चीं! चीं-चीं!" गौरैया ने गाया.

“टुप-टुप-टुप! मैं तुम्हें पकड़ लूंगा! मैं तुम पर झपटूंगा! मैं तुम्हारे साथ खेलूँगा!” टप्पी ने कहा और फिर वो उसके करीब आया. लेकिन गौरैया ने उसे देख लिया. फिर वो और भी जोर से चिल्लाई.

“देखो, यहाँ एक बिल्ली है! देखो वो वहाँ कहाँ छिपी है! देखो, वो उधर है!"

तभी अचानक हर तरफ से गौरैए उड़कर नीचे आयीं. वे झाड़ियों और शाखाओं पर बैठ गईं. कुछ तो टप्पी के ठीक सामने आकर उतरीं.

और फिर वे सब मिलकर उसे डांटने लगीं: “चीं-चीं! चीं-चीं! चीं-चीं! चीं-चीं!”

उनका शोर किसी को भी बहरा बनाने के लिए काफी था.

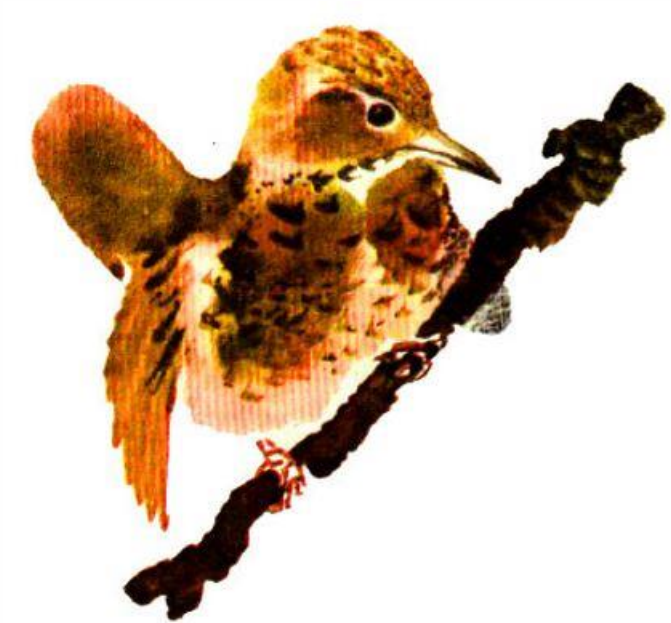

टप्पी डर गया. उसने ऐसा शोर पहले कभी नहीं सुना था. और फिर वो जितनी तेजी से भाग सकता था वो वहाँ से भागा. गौरैए टप्पी को डाँटती रही. फिर उन्होंने एक-दूसरे को बताया कि एक बिल्ली को डराकर भगाने में उन्होंने कितना साहस दिखाया था.

टप्पी के पकड़ने के लिए वहां कुछ भी नहीं था. कोई भी जीव नहीं चाहता था कि वो पकड़ा जाए. इसलिए फिर टप्पी एक पेड़ पर चढ़ गया और उसकी शाखाओं के बीच में छिप गया.

उसने इधर-उधर देखा, लेकिन उसे कोई भी पक्षी दिखाई नहीं दिया. हालाँकि, पक्षी उसे देख सकते थे. वे लगातार उसे देख रहे थे.

तभी टप्पी ने पक्षियों को देखा. बड़े अजीब से दिखने वाले पक्षी उसे घूर रहे थे. वो छोटे भूरे पक्षी, या फिर डांटने वाले गौरैए नहीं थे. वे पक्षी लगभग उसके जितने ही बड़े थे. वे पक्षी ब्लैकबर्ड थे, जो अपना घोंसला बनाने के लिए एक पेड़ की तलाश में थे.

ब्लैकबर्ड्स को भी टप्पी बहुत अजीब लगा.

टप्पी बहुत प्रसन्न हुआ. “टुप-टुप-टुप! वे कौन हो सकते हैं? टुप-टुप-टुप! मैं तुम्हें पकड़ लूंगा! मैं तुम पर झपटूंगा! मैं तुम्हारे साथ खेलूँगा!”

लेकिन टप्पी को यह समझ में नहीं आया कि वो उसमें से किसको पहले पकड़े.

उसके पीछे एक बड़ा ब्लैकबर्ड पक्षी बैठा था. दूसरा उसके सामने, और बहुत करीब बैठा था.

टप्पी इधर-उधर देखता रहा. पहले एक को, फिर दूसरे को. जब वो पीछे वाले को देख रहा था, तो सामने वाले पक्षी ने उसे चोंच मार दी. उससे टप्पी को बहुत दर्द हुआ. टप्पी को समझ नहीं आया कि उसे किस पक्षी ने उसे चोंच मारी थी.

टप्पी पेड़ से कूद गया और फिर झाड़ियों में भाग गया.

इसलिए अब, जब कभी टप्पी किसी पक्षी को देखता है, वो उस पर बिल्कुल ध्यान नहीं देता है. अब वो पक्षियों का पीछा भी नहीं करता है.